विद्यालय वातावरण के आयाम (Dimensions of School Environment)

विद्यालय वातावरण का निर्माण भौतिक एवम् मानवीय संसाधनों के द्वारा होता है। अतः ये सभी मिलकर वातावरण का निर्माण करने के आयाम कहलाते हैं। भौतिक आयाम में विद्यालय में विभिन्न सुविधाएं व संसाधनों की उपलब्धता व अनुपलब्धता से वातावरण का निर्माण होता है व मानवीय आयाम में प्रधानाध्यापक, अध्यापक, क्लर्क, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, प्रबन्धन आदि का स्वभाव व व्यवहार मुख्य होता है। इसे हम निम्न प्रकार दर्शा सकते हैं —

1. भौतिक आयाम ⇒

विद्यालय वातावरण में मुख्यतः भौतिक व मानवीय आयाम के निर्माण में प्रभावी होते हैं। इनमें से भौतिक आयाम में छात्रों व अध्यापकों के लिए पर्याप्त स्थान, खेल मैदान, पुस्तकालय आदि आते हैं। ये सभी भौतिक संसाधन विद्यालय वातावरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि यदि छात्रों व अध्यापकों को ये सुविधाएं नहीं मिलेंगी तो सुविधाओं के अभाव में उनके व्यवहार पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ेगा तथा वे चिड़चिड़ा व क्रोधी स्वभाव व्यक्त करेंगे जिससे विद्यालयी वातावरण भी स्वस्थ नहीं रह पायेगा।

2. मानवीय आयाम ⇒

इसमें मुख्यतः प्रबन्धन, प्रधानाध्यापक, अध्यापक क्लर्क आदि आते हैं। किसी भी विद्यालय के वातावरण में भौतिक आयाम की अपेक्षा मानवीय आयाम का प्रभाव अत्यधिक होता है। भौतिक आयाम की कमी से तो फिर भी समझौता हो सकता है लेकिन यह ध्यान रहे कि भौतिक आयाम की कमी से समझौता करने वाला भी मानवीय संसाधन है। अतः यदि हम विद्यालयी वातावरण के निर्माण में केवल मानवीय आयाम को मुख्य कारक बतायें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। मानवीय आयाम में भी मुख्यतः प्रधानाध्यापक तथा अध्यापक का व्यवहार व इनकी अन्तःक्रिया ही विद्यालय वातावरण का निर्माण करती है। अतः हम यहां केवल प्रधानाध्यापक व अध्यापक के व्यवहार का ही अध्ययन करेंगे, क्योंकि इनका व्यवहार ही विद्यालय वातावरण की रीढ़ की हड्डी है।

प्रधानाध्यापक का व्यवहार ⇒ हॉपिन व क्राफ्ट ने प्रधानाध्यापक के चार व्यवहार बताये हैं जो विद्यालयी वातावरण को प्रभावित करते हैं —

① अलगाव / विलगाव (Aloofness) ⇒ प्रधानाध्यापक अपने को औपचारिक व अवैयक्तिक माहौल में ढालना चाहता है। वह स्टाफ से

Scanned with CamScanner

किसी भी प्रकार का भावात्मक रिश्ता नहीं रखता है, वह स्टाफ से अलग केवल औपचारिकताओं को निभाता है। वह नियम व नीतियों का अनुशरण करने वाला बनता है। अतः अध्यापक भी उससे दूर रहते हैं तथा विद्यालय का वातावरण भी औपचारिकता लिए होता है। क्योंकि प्रधानाध्यापक विद्यालय का नेता होता है। अतः अध्यापक भी उसी का अनुसरण करते हैं तथा छात्रों से आत्मीयता नहीं दर्शाते वे केवल नियमों की बात करते हैं।

(b) दबाव या गति देना =>

प्रधानाध्यापक विद्यालय को गति प्रदान करने वाला होता है। उसके व्यवहार को अध्यापकों द्वारा सकारात्मक व प्रशंसात्मक रूप में देखा जाता है। प्रधानाध्यापक विद्यालय को एक निश्चित दिशा में गति देने वाला होता है। वह स्वयं द्वारा किये कार्यों का उदाहरण विद्यालय के शिक्षकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। वह एक प्रकार से विद्यालय के लिए आदर्श होता है।

(c) उत्पादकता प्रिय => प्रधानाध्यापक विद्यालय के स्टाफ का सूक्ष्म निरीक्षण करता है। वह केवल मात्र निर्देशक ही होता है उसने जो कह दिया वह ही अन्तिम है। विद्यालय के अन्य सदस्यों को महत्व नहीं देता है। उसका सम्प्रेषण एकतरफा होता है उसका उद्देश्य केवल उत्पादकता को बढ़ाना है, उसमें भी केवल स्वयं की बातों को महत्व देना है, साथी अध्यापकों आदि की नहीं सुनता। वह एक सख्त निर्देशक बन जाता है ऐसी स्थिति में विद्यालय का वातावरण अप्रिय हो जाता है।

(d) विचारपूर्ण या लिहाज =>

इस स्थिति में अत्यन्त विकास होता है। वातावरण बड़ा ही सुन्दर होता है। इसमें प्रधानाध्यापक अध्यापकों का मानवीय रूप में आवश्यकता से अधिक ध्यान रखता है। अध्यापक भी इस स्थिति को समझते हैं तथा वे भी प्रत्येक स्थिति में अध्यापक के साथ होते हैं। सभी एक-दूसरे का लिहाज करते हैं।

Scanned with CamScanner

अध्यापक का व्यवहार

अध्यापक के व्यवहार मे भी मुख्यत: चार प्रकार बताये गये है जो निम्न है—

(i) मुक्ति / निर्मुक्तता (Disengagement) ⇒ इस स्थिति मे अध्यापक कार्य की परिस्थिति में स्वयं को अलग रखता है वह कुछ कार्यो मे प्रधानाध्यापक से अलग रहता है। इसके कई कारण हो सकते है हो सकता है प्रधानाध्यापक द्वारा इसकी सूचना ही न दी हो, जबकि अध्यापक की उसमे मुख्य भूमिका हो। ऐसे मे वह स्वयं को पृथक कर लेता है। अत: ऐसे मे विद्यालय की प्रगति रुक सी जाती है व उसका कुछ विकास भी नही हो पाता है।

(ii) बाधा / रुकावट (Hindrance) ⇒ ऐसी स्थिति तब आती है जब प्रधानाध्यापक द्वारा अध्यापक को अनावश्यक कार्यो का दायित्व सौंप दिया जाता है तथा अध्यापक को ऐसा महसूस होता है जैसे उसे परेशान किया जा रहा हो तथा उसके कार्यो में प्रधानाध्यापक द्वारा व्यर्थ के दायित्वों को देकर बाधा या रुकावट उत्पन्न की जाती है जा रही है। ऐसे मे विद्यालय का विकास रुक जाता है।

(iii) सद्भाव / लगाव (Spirit) ⇒ ऐसी परिस्थितियों मे अध्यापकों मे उत्साह रहता है वह आगे बढकर संस्थान / विद्यालय के कार्यो को करता है क्योंकि उसे ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर दी गई है अत: वह भी उत्साही होकर कार्यो को अंजाम देता है। विद्यालय का विकास होता है व स्वस्थ वातावरण होता है।

(iv) आत्मीयता / लगाव ⇒ (Intimacy) ⇒ इसमे दोनों की सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है वह आपस में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण मे रहता है तथा विद्यालय की तरक्की की ओर ध्यान देता है। इसमे अध्यापक के कार्य अपूर्ण रहने पर भी साथी अध्यापकों में आपस में लगाव व आत्मीयता बनी रहती है।

इस प्रकार उक्त वर्णित आयाम विद्यालय के वातावरण को प्रभावित करते है।

Scanned with CamScanner